आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-54 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मार्च , 2016

लखनऊ में बढ़ रही है सड़क एवं कामकाजी बच्चों की संख्या

रिपोर्टर - विजय/शन्नो

बढ़ते कदम के सदस्यों ने नवंबर में सराय काले खां में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना की और बच्चों की गिनती कर डाली। इस सर्वे से संगठन ने समाज और सरकार को यह बताने की कोशिश की, कि यह काम संभव है जो कि आसानी से किया जा सकता है। इसी प्रकार संगठन के सदस्यों ने कुछ ऐसा ही सर्वे उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ की 15 बस्तियों में किया। सर्वे के दौरान संगठन के सदस्य विजय कुमार को बाल मजदूरी के और भी गंभीर पहलूओं के बारे में पता चला। इस सर्वे से इस बात का पता लगा कि कितनी अधिक संख्या में बच्चे बाल मजदूरी की चंगुल में फंसते जा रहे हैं, ज्यादातर बच्चे क्या काम कर रहे हैं और भारी संख्या में यू.पी. की राजधानी लखनऊ बाल मजदूरी का एक बहुत बड़ा जाल बनता नजर आ रहा है। अगर इस विषय पर गंभीरता से नहीं सोचा गया तो शायद एक दिन ऐसा

आएगा कि पूरे देश के बच्चे बाल मजूदरी कर रहे होंगे और बच्चे शिक्षा से दूर होते चले जाएंगे। हमारे समाज में बहुत सी एजेंसिया काम कर रही हैं, लेकिन फिर भी इन बच्चों की संख्या शिक्षा की ओर बढ़ने के बजाए घटती ही जा रही है और इस बारे में किसी को भी भनक तक नहीं है कि इतने बड़े पैमाने पर बच्चे बाल मजदूरी में फंसते जा रहे हैं। जिस तरह से बच्चे भारी संख्या में कबाड़ बीनते नजर आ रहे हैं। इससे साबित है कि जो भी लोग बच्चों से काम करवा रहे हैं वह बहुत हद तक बच्चों से अच्छे पैसे कमा रहे हैं, जिससे उन्हें लाखों का फायदा भी हो रहा है। जो बच्चे घरों में काम करने जाते हैं, मार्किटों में मछली बेचने का काम कर रहे हैं, उन बच्चों पर भी गौर देने की जरूरत आ गई है। साथ ही जो बच्चे रिक्शा चलाने का काम करते हैं, वह कैसे अपना जीवन गुजार रहे हैं। आखिर कैसे बच्चों को बचाया जा सकता है, जबकि बच्चे शिक्षा से दूर होते

शेष पृष्ठ 6 पर

लखनऊ में बाल मजदूरी की बदरंग तस्वीर

रिपोर्टर - विजय/शन्नो

यू.पी.की राजधानी लखनऊ में बाल मजदूरी की बढ़ती संख्या को रोकने के लिए अधिकारी बहुत सक्रियता से कार्य कर रहे हैं, लेकिन फिर भी इस समस्या का समाधान करने में सफलता नहीं मिल पा रही है। क्योंकि बाल मजदूरी की संख्या में बढ़ोतरी होती जा रही है। बालकनामा अखबार की सलाहकार शन्नो ने बच्चों के बारे में जानने हेतु रेलवे क्रासिंग का दौरा किया तो देखा कि छोटी लड़कियां मछली मार्किट में काम कर रही हैं, जिनकी उम्र 11 साल से लेकर 17 साल तक है। यह बच्चियां सुबह सुबह मार्किट में मछली बेचने का काम करती हैं। बालकनामा की सलाहकार इन बच्चों के पास पहुंची तो देखा कि सच में इन बच्चों ने मार्किट में अपनी दुकान लगाई हुई है, जहां बहुत से लोग भीड़ लगाकर खड़े हुए.हैं और मछली खरीद रहे हैं। छोटी लडकियां अपने नन्हें

शेष पृष्ठ 4 पर

रैन बसेरों में आश्रय के लिए बेघर बच्चे बना रहे हैं झूठे परिवार

बातूनी रिपोर्टर रुस्तम, रिपोर्टर ज्योति

सराय काले खां में जो रैन बसेरे बने हुए हैं वह सिर्फ परिवार वालों के लिए हैं। इन रैन बसेरों में बिना परिवार का कोई भी सदस्य नहीं रह सकता चाहे वह अकेला एक बच्चा ही क्यों न हो। जो बच्चा अपने परिवार वालों से अलग और अकेले हैं वह जब रैन बसेरे में सोने के लिए अंदर जाते हैं तो रैन बसेरे का जो गार्ड है वह उन बच्चों को अंदर नहीं जाने देता और उन्हें रैन बसेरे में रहने के लिए मना करते हैं। कहते है कि इस रैन बसेरे में सिर्फ वह बच्चे रह सकता है जो अपने परिवार के साथ है। इसलिए जो बच्चे सराय काले खां में अकेले रह रहे हैं, वह बच्चे रैन बसेरों में रहने के लिए दूसरे परिवार वालों के साथ झूठा रिश्ता बनाकर रैन बसेरे में रह रहे हैं। वह बच्चे दूसरे परिवार को अपना चाचा, चाची या मामा, मामी बना रहे हैं। यह परिवार वाले जो बच्चों के साथ इस तरह झूठा रिश्ता बना रहे हैं, वह इन बच्चों से

इसकी कीमत भी ले रहे हैं।

वह बच्चों को अपने साथ परिवार में शामिल करके उनसे खर्चा पानी ले रहे हैं और बच्चे रैन बसेरे में रहने के लालच में उन्हें पैसे भी दे रहे हैं। रैन बसेरे में रह रहे परिवार वाले ऐसे अकेले बच्चों से पैसे ऐंठ रहे हैं और बदले में उन बच्चों को वह अपने परिवार में शामिल कर रहे हैं। पत्रकारों ने इस बात पर जाकर छानबीन की तो 13 वर्षीय संजय (परिवर्तित नाम) ने बताया कि बच्चे कबाड़ा चुनते है भीख मांगते हैं। पर जब हम रात को सोने के लिए रैन बसेरे में जाते हैं तो गार्ड मना कर देता हैं। हमें नहीं जाने देता। वह कहते हैं कि रैन बसेरा परिवार वालों का है, इसलिए जब तुम अपने परिवार के साथ आओगे तभी तुम्हें रैन बसेरे में रह सकते हो। इसके लिए फिर हम बच्चों ने अपने आस पास रहने वाले लोगों को अपना परिवार बनाया और रैन बसेरे में रहने लगे। पर वही हमसे खर्चा पानी भी मांगते हैं।

13 वर्षीय पवन (परिवर्तित नाम) ने कहा कि हमारे लिए स्पेशल होम और सेंटर होता तो हमें यह सब दुख और परेशानी नहीं झेलनी पड़ती। हम बच्चों के लिए सेंटर बनवाए जाएं और रैन बसेरों के इंतजामात भी किए जाएं, जिसमें हम बच्चे आसानी से रह से सकें।

कौन समझेगा ललिता का दर्द

बातूनी रिपोर्टर शिवा, रिपोर्टर शन्नो

बालकनामा अखबार की सलाहकार शन्नो ने उत्तर प्रदेश की राजधनी लखनऊ में बसी बस्तियों में दौरा किया और सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं व स्थिति के बारे में जानने की कोशिश की। शन्नो जब रेलवे क्रॉसिंग पहुंची तो देखा कि एक 15 वर्ष की सहमी सी बच्ची अपने घर के बाहर गली में बैठी है। उस बच्ची से बात करने के लिए सलाहकार उसके नजदीक गई तो पता चला कि उसका नाम ललिता है और वह दोनों पैरों से विकलांग है। वह इसी तरह अपने घर के बाहर बैठी रहती है और भीख मांगती है। यह जानने के बाद सलाहकार ने वहां आसपास के लोगों से पूछा कि ललिता के माता पिता कहां हैं तो उन्होंने बताया कि ललिता के माता पिता का देहांत हो चुका है। ललिता अपनी बहन के पास रहती है। उसके बाद सलाहकार ने उसकी बहन से बात की और पूछा कि वह ललिता को स्कूल क्यों नहीं भेजती हैं तो उन्होंने बताया कि ललिता को किसी भी स्कूल में दाखिला नहीं मिलता है, क्योंकि ललिता को शौचालय ले जाने के लिए एक व्यक्ति का होना जरूरी है। वह खुद से तो शौचालय जा नहीं सकती तो फिर रोज स्कूल कैसे जाएगी। जब वह चल फिर नहीं सकती और इस समस्या के चलते कौन उसे रोज छोड़ने जाएगा।

वैसे भी ललिता को कई बार स्कूल के अधिकारियों ने वापस ले जाने को कहा कि इसे अपने घर पर ही रखो, हम इसकी देखभाल करेंगे कि बच्चों को पढ़ाएंगे। इसलिए हम ललिता को स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं भेजते हैं। क्योंकि ललिता कभी कभी अपने कपड़ों में ही मलमूत्र कर देती है, वह खुद से शौचालय तक नहीं जा पाती है। उसे शौचालय में ले जाने के लिए एक व्यक्ति का होना आवश्यक है और ऐसे में उसकी देखरेख स्कूल में कौन करेगा। इस कारण से हम ललिता को स्कूल नहीं भेजते हैं।

उसके बाद वहां के आसपास के लोगों ने कहा कि ललिता पूरे दिन एक स्पंज की गद्दी पर बैठी रहती है। यह बात सुनते ही बालकनामा की सलाहकार ने उस गद्दी को गौर से देखा तो देखने से पता चला कि ललिता को उस स्पंज की गद्दी पर इसलिए बैठाया जा रहा था, ताकि अगर ललिता कपड़ों में मलमूत्र कर भी लें तो आसानी से सूख जाए। यह जानकर सलाहकार ने बहुत ही विनम्रता के साथ ललिता से कहा कि तुम स्कूल जाना चाहती हो तो उसने एकदम मना कर दिया और इतना कहकर वह थोड़ी देर तक शांत हो गई और उसकी आंखे नम हो गई।

ललिता की यह दशा देखकर लगा कि वह अब किसी से कुछ नहीं कहना चाहती। लग रहा था जैसे वह खुद से मायूस है। इस बारे में जब सलाहकार ने पूछा तो पड़ोसियों ने बताया कि ललिता किसी से कुछ नहीं बताती है कि उसे क्या चाहिए क्योंकि उसकी मदद अभी तक किसी ने नहीं की है। कोई भी उसके बारे में बात नहीं करता और न ही उसके भविष्य के बारे में कोई बात करता है। इस वजह से ललिता किसी से कुछ भी नहीं कहती है और इसी तरह रोने लगती है। अगर ललिता को एक व्हील चेयर की सुविधा मिल जाए तो वह कम से कम खुद से शौचालय जा सकती है उसे किसी की मदद नहीं लेनी पड़ेगी। वह जब चाहे कहीं भी इधर उधर घूम फिर सकती है और स्कूल में जाकर अपनी शिक्षा प्राप्त कर सकती है।

जगह के अभाव में पटरियों पर खेलने को मजबूर स्ट्रीट चिल्ड्रन

बातूनी रिपोर्टर पूनम, रिपोर्टर चांदनी

सांसी कैंप में कम से कम 1000-1500 की संख्या में झुग्गी झोपड़ियां बनी हैं, जिस जगह में यह झुग्गियां बनी हैं, वहां धूप नहीं आती है। इसलिए यहां के तमाम बच्चे धूप लेने ट्रेन की पटरियों पर जाते हैं। जब तक सुपरफास्ट ट्रेन नहीं आती है, तब तक बच्चे वहां धूप में खेलते रहते हैं। पर जैसे ही सुपरफास्ट ट्रेन आती है तो यह बच्चे गहराई में बने नीचे घरो की ओर भागने लगते हैं। जब बालकनामा की पत्रकार चांदनी ने इस प्रकार बच्चों को भागते देखा तो बच्चों से पूछा कि कहां जा रहे हो, उन्होंने कहा कि दीदी आप भी हमारे साथ नीचे चलो, क्योंकि जो ट्रेन आ रही है वह बहुत तेजी से आती है और उसकी हवा से ट्रेन के नीचे आने का डर रहता है। जब पत्रकार ने ट्रेन को आते देखा तो सच में ट्रेन बहुत तेजी से आ रही थी और वहीं ट्रेन की पटरियों के किनारे ही झुग्गियां भी बनी हुई थी।

कुछ समय बाद जब ट्रेन चली गई तो चांदनी ने बच्चों से पूछा कि आप सभी को इतनी तेजी से आती ट्रेन को देखकर डर नहीं लगता और ऐसे में ट्रेन के साथ भागने से आपकी जान भी जा सकती है तो 14 वर्षीय प्रीती (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मेरी एक छोटी बहन ऐसे ही ट्रेन के नीचे आ गई थी, जिसका देहांत हो गया था। इसलिए हम सभी बच्चे ट्रेन के आने से पहले ही यहां से भाग जाते हैं और थोड़ी देर बाद फिर से आ जाते हैं। यह सुनकर चांदनी ने बच्चें को समझाया और कहा कि तुम यहां क्यों आते हो, तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए। तो प्रीती ने कहा कि क्या करें दीदी आना पड़ता है। हमारे घरों में धूप नहीं पहुंचती क्योंकि हमारे घर गड्ढे जैसी जगह में बने हैं बिल्कुल नीचे की ओर। अब तो ठंड इतनी पड़ रही है कि मजबूरन हम बच्चे ठंड से बचने के लिए धूप सेंकने ट्रेन की पटरियों पर आते हैं। हमें डर तो लगता है पर क्या करें ठंड ही इतनी पड़ रही है और यहां कोई ऐसा पार्क तो है नहीं, जहां हम बच्चे बिना किसी भय के खेल कूद सकें।

बच्चों ने कहा: मां बाप ही सिखाते हैं भीख मांगना

चांदनी और शम्भू

राजस्थान से आए बंजारा समूह के बीच बालकनामा के पत्रकारों ने दौरा किया और वहां पर रहने वाली छोटी छोटी लड़कियों से मिलकर उनसे बात की। पत्रकारों ने उन्हें एक खेल भी खिलाया। खेल खिलाने के बाद चांदनी ने उनसे पूछा कि तुम सभी लड़कियां क्या करती हो तो उन्होंने बताया कि हम अभी घर में ही रहती हैं। पत्रकार ने कहा कि तुम स्कूल जाते हो तो लड़कियों ने कहा कि हम कभी कभी स्कूल जाते हैं, रोज स्कूल नहीं जाते। तब पत्रकार ने पूछा कि स्कूल क्यों नहीं जाते तो बच्चों ने कहा कि हम पढ लिखकर क्या करेंगे। हमें बड़े होकर भीख ही मांगना पड़ेगा। क्योंकि हम बच्चे जब तक छोटे हैं हमारे माता पिता हमें घर पर ही रखते हैं पर जैसे ही हम 15 या 16 साल के हो जाते हैं तो हमें भीख मांगने को कहा जाता है और हम बच्चे बड़े होकर भीख मांगने का काम करते हैं।

फिर जब तक हम जीते हैं भीख ही मांगते हैं। हमारी शादी होती है तो फिर वही भीख मांगने का काम हम अपने बच्चों को भी सिखाते हैं। यह हमारा खनदानी पेशा है। हमारा बचपन घर में बीतता है। जवानी भीख मांगने में निकल जाती है। हमें हमारे माता पिता ही शुरू से भीख मांगना सिखाते हैं। फिर हमें भीख मांगने के लिए भेजा जाता है। क्योंकि हमारी शादी भी तभी होती है, जब हम भीख मांगने का काम करते हैं। अगर हम भीख नहीं मांगेंगे तो हमसे कोई शादी भी नहीं करेगा। इसलिए हम बच्चों को हमारे माता पिता बचपन में भीख मांगने नहीं भेजते पर जैसे ही बड़े होते हैं, हमें भीख मांगने के लिए जाना पड़ता है और फिर हमारी शादी होती है। कुछ लड़कियों की शादी 10 -12 साल की उम्र में हो चुकी है। चांदनी ने उनसे कहा कि अगर आप सभी को कोई काम दिया जाए तो आप वो काम करोगे तो उन्होंने साफ इंकार कर दिया और कहा कि बिल्कुल नहीं करेंगे क्योंकि भीख मांगना हमारी परंपरा भी है और खनदानी पेशा भी है।

प्रदूषण के शिकार बन रहे स्ट्रीट चिल्ड्रन

बातूनी रिपोर्टर शिवम, रिपोर्टर शम्भू

बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने रैली निकालकर लगाई गुहार

राजधानी दिल्ली में बढ़ रहे प्रदूषण के कारण यहां की हवा में सांस लेना दूभर हो रहा है। जरा सोचिए जो लोग अपने घरों में रहते हैं और जिनका आना जाना बंद गाड़ियों में होता है, उन्हें सांस लेने में इतनी दिक्कतें हो रही हैं तो जो छोटे छोटे बच्चे, जिनके घर नहीं हैं वो फ्लाईओवर के नीचे, फुटपाथ पर, स्टेशनों पर जिंदगी गुजार रहे हैं, उनका क्या हाल हो रहा होगा।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए बढ़ते कदम - सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन के सदस्यों ने सराय काले खां फ्लाईओवर के नीचे गुजर बसर करने वाले बच्चों के साथ मिलकर रैली निकाली। रैली के दौरान बच्चों ने सरकार से गुहार लगाई कि हम बच्चों को भी इस प्रदूषण से बचाओ। बच्चों ने बताया कि वे दिन रात बसों, कारों, ट्रकों, मोटरसाइकिलों इत्यादि से निकलने वाली भयंकर आवाजों और धुएं की मार झेल रहे हैं। 13 साल की शबाना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''ट्रैफिक के एकदम नजदीक रहने के कारण रात दिन गाड़ियों का धुआं व आवाजें सीधा हमारे फेफड़ों में जाता है। जिसके कारण कभी कभी अचानक कानों में बहुत दर्द होता और सांस लेने में दिक्कत होती है।'' 10 वर्षीय करन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''यदि हम बीमार हो जाते हैं तो सड़क पर रहने के कारण हमारी बीमारी और बढ़ जाती है।'' 12 वर्षीय अजय (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''हमें बहुत डर लगता है कि कहीं हम भयानक बीमारी के शिकार न हो जाएं।'' 9 वर्षीय देवेंद्र (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''हम तो कभी भी स्वच्छ हवा में सांस नहीं ले पाते। हमें इतनी प्रदूषित धुएं वाली हवा में ही सांस लेना पड़ता है, जिसके कारण हमें सांस लेने में बहुत दिक्कत होती है।'' 17 वर्षीय बालकनामा अखबार के संवाददाता शंभू ने जानकारी देते हुए कहा कि बच्चों के साथ साथ उनके माता पिता ने भी बताया कि सरकार हमारे लिए कुछ भी नहीं कर रही। हम सड़कों पर रहते हैं और यहीं बनाते खाते हैं, जिससे गाड़ियों की धूल, धुआं इत्यादि उड़ उड़कर हमारे भोजन में जाकर गिरता है, इससे हमें बहुत दिक्कत होती है। हम सभी चाहते हैं कि सरकार हमारे लिए किसी अच्छी जगह रहने की व्यवस्था करे।

14 वर्षीय प्रियंका ने कहा कि, ''अगर दिल्ली के मुख्यमंत्री जी को खांसी आती है और सांस लेने में दिक्कत होती है तो वे तो बैंगलोर जाकर अपना इलाज करा लेते हैं, लेकिन सड़कों पर जिंदगी गुजार रहे हम बच्चों को तो सरकारी अस्पताल वाले भी देखते ही भगा देते हैं।''

बालकनामा अखबार की सलाहकार 21 वर्षीय शन्नो ने कहा कि दिल्ली में वास्तव में दिन पर दिन प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जिससे सबसे अधिक परेशानियों का सामना सड़कों, फुटपाथों और फ्लाईओवर के नीचे रहने वाले बच्चों को करना पड़ रहा है। सरकार को चाहिए कि इन बच्चों को जल्द से जल्द इससे बचाए, नहीं तो ये गंभीर बीमारी के शिकार हो सकते हैं।

चाइल्ड लाइन 1098 की दी जानकारी

बातूनी रिपोर्टर किशन, रिपोर्टर शम्भू

बढ़ते कदम के सदस्यों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करने के दौरान दस हजार तीन सौ बीस बच्चों से सीधा सम्पर्क किया और इन बच्चों की स्थिति व समस्याओं के बारे में जाना और इन बच्चों को चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर के बारे में जानकारी दी और उन्हें जागरूक किया। इस दौरान सबसे चौंकाने वाली बात यह पता चली कि दस हजार तीन सौ बीस सड़क एवं कामकाजी बच्चों में से सिर्फ उन्हीं बच्चों को 1098 हेल्प लाइन नंबर के बारे में पता था जो कहीं न कहीं किसी संस्था या संगठन के सम्पर्क में थे और इसमें अश्चर्य करने वाली बात यह है कि उन बच्चों को कुछ भी नहीं पता था, जो किसी के भी सम्पर्क में नहीं है। वह चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर के बारे में नहीं जानते हैं। किसी भी बच्चे को इस हेल्प लाइन के बारे में नहीं पता था।

बढ़ते कदम के सदस्यों ने जब सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ गणना करने के दौरान यह सभी समस्याएं अनुभव की तो इन्होंने गणना करने के दौरान इस बात पर जोर दिया और गंभीरता के साथ इस नम्बर के बारे जानकारी भी दी तथा दस हजार तीन सौ बीस बच्चों को हेल्पलाइन नंबर के बारे में जानकारी दी। उन्हें 1098 नम्बर भी एक रसीद में लिखकर दिया, जिससे वह बच्चे इस नम्बर को आसानी से याद रखें और जरूरत पड़ने पर आसानी से इस्तेमाल कर सकें। गणना करने के बाद बढ़ते कदम के सदस्यों ने इनके साथ बैठक का आयोजन भी किया और चाइल्ड हेल्पलाइन के बारे में कार्यशाला करके बच्चों की राय ली तथा बच्चों के साथ हो रही समस्याओं के बारे में बात की। चर्चा के दौरान 15 वर्षीय किशन ने कहा कि हम बच्चे अलग अलग जगह कई प्रकार का काम करते हैं और इस दौरान बहुत से लोग हम से ठीक से व्यवहार नहीं करते। हमसे झगड़ा भी करते हैं और मारपीट करते हैं। ऐसे में अगर हमें पहले से पता हो कि बच्चों की हेल्प लाइन होती है, जिससे हम बच्चे अपनी मदद ले

सकते हैं तो इस तरह की समस्या हमारे साथ कम होने लग जाएंगी। कोई भी हमारे साथ दुर्व्यवहार करने से पहले ही सतर्क रहेगा। बच्चों ने यह भी कहा कि जैसे बड़ी बड़ी कंपनियां अपना प्रचार कर रही हैं, हर जगह अपने नाम के पोस्टर लगवाकर। ऐसी ही हम बच्चों की हेल्प लाइन का भी पोस्टर हर जगह होना चाहिए, जिससे बच्चे अपनी हेल्पलाइन के बारे में जान सकें। सरकार को इस नम्बर की जानकारी हर बस अड्डे और बस स्टैन्ड पर देना चाहिए। इसके साथ साथ जैसे डी.टी.सी बसों में सभी हेल्प लाइन के बारे में बताया जाता है, लेकिन बच्चों की हेल्प लाइन के बारे में नहीं बताया जाता। हम बच्चे चाहते हैं कि 1098 चाइल्ड हेल्प लाइन के बारे में भी बसों में बताया जाए, जिससे ज्यादा से ज्यादा बच्चों को और लोगों को जागरूक किया जा सके।

संपादकीय

प्रिय साथियों,

आप सभी को मेरा नमस्कार!

बालकनामा अखबार को इतना प्यार और सरहाना देने के लिए हम सभी मीडिया और पाठकों का धन्यवाद करते हैं। आपके इसी प्रोत्साहन और सहयोग का परिणाम है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अखबार की प्रसिद्धि दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। इस बार हम आपको बताने जा रहे है कि बालकनामा अखबार ने लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करा लिया है जिससे इसने अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रसिद्धि हासिल कर ली है। हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे यह जानकर बहुत खुश हैं कि बच्चे पूरी मेहनत और लगन के साथ बच्चों की आवाज लोगों तक पहुंचाने में कामयाब हो रहे हैं। हम बच्चे आप सभी को हर बार की तरह इस बार भी पक्की और सच्ची खबरों से रूबरू कराएंगे।

हम चाहते हैं कि आप बालकनामा अखबार को हर तरह का अपना सहयोग (छोटा या बड़ा, पैसे या किसी और प्रकार से) जारी रखें। यदि आप हमें सहयोग करना चाहते हैं तो ऊपर दिए गए पते पर हमसे संपर्क करें और अपने सुझाव हमें balaknamaeditor@gmail.com लिखकर भेजें।

संपादकीय मंडल

बच्चों से करा रहे नशीले पदार्थों का व्यापार

बातूनी रिपोर्टर धीरज, रिपोर्टर शम्भू

पुलिस वालों की नांक के नीचे छोटे छोटे बच्चे नशीले पदार्थ बेच रहे हैं। यह वास्तविक घटना कहीं और की नहीं, बल्कि हजरत निजामुद्दीन दरगाह के आसपास की है, जहां बच्चे चरस, गांजा आदि नशीले पदार्थ बेच रहे हैं। यह बच्चे जिस जगह पर नशीले पदार्थ बेचते हैं, उसके ठीक सामने पुलिस स्टेशन भी है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि पुलिस वालों को इस घटना की भनक तक नहीं है। जब बालकनामा के पत्रकार को इस बात का पता चला तो उन्होंने इस मुद्दे पर जाकर छानबीन की और बच्चों से बात की तो बाल साथियों ने बताया कि यहां पर 24 घंटे नशीले पदार्थ मिलते हैं। अगर उनके पास पैसे लेकर जाओगे तो वह बच्चा खुद नशीले पदार्थ दे देगा। इस नशीले पदार्थ

को खरीदने के लिए 200 से 300 रुपए देने पड़ते हैं। ज्यादातर यह नशीले पदार्थ बेचने का काम बच्चे करते हैं, जिनकी उम्र 15 साल से लेकर 18 साल तक है। इस वजह से ज्यादातर बच्चे ही नशे की चपेट में आ रहे हैं और गलत संगत में पड़ रहे है। इसके बाद भी पुलिस वाले नशीले पदार्थों की बिक्री बंद करने के लिए कोई कदम नहीं कर रहे हैं जिससे उन बच्चों को इस काम को करने से रोका जा सके और उनको नशे की चपेट में आने से बचाया जा सके।

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों से जबरन काम करा रहे हैं पुलिस कर्मी

बातूनी रिपोर्टर संदीप, रिपोर्टर शम्भू

रेलवे स्टेशनों पर काम करने वाले बच्चों के साथ पुलिस अधिकारियों का रवैया और बुरा बर्ताव दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। रेलवे स्टेशनों पर पुलिस वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से जबरन काम करवाते हैं। जो बच्चे किसी ना किसी कारण से अपने घरों से भाग कर आते हैं, वह रेलवे स्टेशनों पर रहने आ जाते हैं। और वह स्टेशन को ही अपना घर मानने लगते हैं तथा उसी रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनते हैं और अलग अलग तरह के काम करने लग जाते हैं। यह बच्चे अपने घर से रेलवे स्टेशनों पर अपना जीवन गुजारते हैं, जिसकी वजह से इनके कपड़ों से लेकर इनके शरीर तक साफ सुथरे नहीं रह पाते।

अधिकतर इन बच्चों के हाथ पांव गन्दे होते हैं और उन्हें इस तरह गन्दी स्थिती में देखकर पुलिस वाले इन बच्चों का फायदा उठाते हैं और उनसे काम करवाते हैं। बालकनामा रिपोर्टर से रेलवे स्टेशन पर काम करने वाले 16 वर्षीय संदीप (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भईया जब हम रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने का काम या अन्य काम करते हैं तो पुलिस वाले भईया हमें काम करने के लिए बुलाते हैं। जब रिपोर्टर ने पूछा कि किस तरह का काम तो संदीप ने बताया कि वह हमसे झाड़ू लगवाते हैं और समय पड़ने पर अलग अलग प्रकार का काम करवाते हैं। अगर हम बच्चे काम करने के लिए मना करते हैं तो हमारे साथ गाली गलौज करते हैं। हमें बुरी तरह मारते हैं और यह जो पुलिस वाले होते हैं वह कांस्टेबल ही होते हैं। बालकनामा के रिपोर्टर ने इस बात को और अच्छे से और सच्चाई की तह तक जानने के लिए बच्चों के साथ गए तो पता चला कि सच में बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार हर एक रेलवे स्टेशन पर हो रहा है।

बच्चों ने इस अखबार के माध्यम से अपील की है कि पुलिसवाले रेलवे स्टेशनों पर काम कर रहे बच्चों के साथ जबरदस्ती करके उनसे अपना काम ना करवाएं और उनके साथ मारपीट न करें। क्योंकि बच्चों को मारना कानूनन अपराध है। हम बच्चे तो अनजान हैं। हमें प्यार से समझाकर सही दिशा दिखाएं, न कि हमारे साथ कठोरता से पेश आएं।

ठण्ड से बचने के लिए कुत्तों के पास लेटकर रात गुजारने को मजबूर बेघर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर फैजान, रिपोर्टर शम्भू

ठंड में सड़क एवं कामकाजी बच्चे कैसे जीते हैं और कैसे अपनी रात गुजारते हैं, इसके बारे में बालकनामा पत्रकार शम्भू ने जब खुले आसमान में पुल के नीचे और सड़कों के किनारे रहने वाले बच्चों से मिलने के लिए रात में दौरा किया तो देखा कि बच्चे ठंड में पुल के नीचे अपनी रात गुजार रहे हैं। एक ही कंबल में 4 से 5 बच्चे सो रहे हैं ताकि उन्हें ठंड न लगे ठंड से बच सकें। कुछ ऐसे बच्चे थे जो ठंड से बचने के लिए कुत्तों के साथ भी सोते हुए नजर आए।

जब शंभू ने बच्चों से बात की तो उन्होंने बताया कि जिस दिन उन्हें ज्यादा ठंड लगती है, उस दिन वे अपने कपड़े जला कर आग का प्रबंध करते हैं। उस आग के आस पास ही अपने सोने का इंतजाम करते हैं। ऐसा करने से उन्हें कम ठंड लगती है। वह इसी प्रकार अपनी पूरी रात गुजारते हैं। इसके साथ

ही पत्रकार ने कुछ बच्चों के माता पिता से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि यहां पर रैन बसेरे बने हुए हैं, लेकिन हमें उसमें रहना अच्छा नहीं लगता क्योंकि वहां पर कोई भी व्यक्ति किसी के पास भी शराब पीकर बगल में आकर सो जाता है। इस कारण हमें डर रहता है। हमें अपने बच्चों की चिंता रहती है। इसलिए हम रैन बसेरे में नहीं रहते हैं।

15 वर्षीय इस्लाम (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब हम इस तरह खुले आसमान में सोते हैं तो हमें बहुत परेशानी होती है। क्योंकि जब आधी रात को जोरो की ठंड पड़ती है और उसके साथ ठंडी ठंडी ओस भी गिरती है। उस वक्त हमें बहुत ठंड लगती है और हमारी ठंड कंबल भी नहीं रोक पाता, क्योंकि ओस गिरने के कारण हमारा पूरा कंबल गीला हो जाता है। ऐसा महसूस होता है जैसे मानो कंबल को किसी ने पानी से भिगो दिया हो। गीले कंबल में और ओस पड़ती हुई कड़ाके की ठंड में पूरी रात हमारी दांतो की घिग्घी बंधी होती है। जब हमसे ठंड बर्दाश्त नहीं होती तो हम नशे का इस्तेमाल करते हैं। क्योंकि हमें नशे में ठंड महसूस नहीं होती। धीरे धीरे बच्चे नशा करने लग जाते हैं। यह एक बहुत बड़ा कारण है, जिसमें नए नए बच्चे नशे में लिप्त होने लगते हैं। इसी वजह से अधिकतर बच्चे ठंड में ही नशे की चपेट में आ जाते हैं।

13 वर्षीय जमशेद (परिवर्तित नाम) ने कहा कि हम सरकार से चाहते हैं कि वह हम बच्चों के लिए कोई महफूज जगह पर घरों की सुविधा दे, ताकि हम बच्चे इन कठिनाइयों से बच सके।

डंडे के बल पर घर भेजने का किया बंदोबस्त

बातूनी रिपोर्टर अमन, सोनू, रिपोर्टर शम्भू

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर बालकनामा के पत्रकार ने रेलवे स्टेशन पर काम करने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। उस मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपने बारे में बताया कि कैसे बच्चे पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अलग अलग प्रकार का काम कर रहे हैं। इसके साथ बच्चों को हो रही समस्याओं के बारे में भी बात की, कि कैसे बच्चे स्टेशन पर कबाड़ा और बोतल बीनने का काम करते हैं, जिससे वे दो पैसे कमा कर अपना पेट भरते हैं। लेकिन आजकल उत्तर प्रदेश पुलिस बच्चों के साथ बहुत सख्ती कर रही है और बच्चों को जबरन रेलवे स्टेशन से मार मार के घर भेज रही है।

इस बारे में और जानकारी लेने के लिए बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव ने 16 वर्षीय तारिख (परिवर्तित नाम) से बात की तो तारिख ने बताया कि यह पुलिस वाले यू.पी. से रोज सुबह 10 बजे से 12 बजे के समय में पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आते हैं। यह पुलिस वाले ही बच्चों को जबरदस्ती पकड़कर उनके घर भेज रहे हैं। यह बात सुनने के बाद पत्रकार ने बच्चों से कहा कि

यह तो अच्छी बात है कि वह आपको अपके घर भेज रहे हैं। आपको इससे क्या परेशानी है तो तारिख ने बताया कि हमें इससे बहुत परेशानी हो रही है, क्योंकि पुलिस हमारे साथ जबरदस्ती करके जबरन हमें घर भेज रही है। अगर बच्चे घर जाने के लिए मना

अब तक 40 बच्चों को पहुंचाया घर

करते हैं तो वह बच्चों को बुरी तरह डंडे से मारते हैं।

इतनी सर्दी में डंडे की मार बच्चों से सही नहीं जा रही है। बच्चों को बहुत पीड़ा होती है और बताया कि दिनांक 17.1.16 की रात को पुलिस वाले कम से कम 40 बच्चों को पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से हटा चुके हैं। उसके बाद पत्रकार पेटी मार्किट में गए। वहां जाकर दूसरे बच्चों से भी इस मुद्दे पर बातचीत की 17 वर्षीय संतोष (परिवर्तित नाम) ने बताया कि यू.पी.पुलिस बच्चों को घर भेज रही है। वह बच्चों के लिए सही कार्य कर रही है पर उनका बच्चों को घर भेजने का तरीका गलत है, क्योंकि पुलिस वाले रात को 10 बजे से 12 बजे के समय में बच्चों पकड़ कर ले जाते हैं, जब वह गहरी नींद में सो रहे होते हैं। ऐसे में बच्चों की नींद भी हराम हो जाती है, इस वजह से बच्चे डरके मारे सो भी नहीं पा रहे हैं।

मजदूरी करना बच्चों की मजबूरी ही नहीं, जरुरत भी है

बातूनी रिपोर्टर सुमित, रिपोर्टर पूनम

10 वर्षीय सुमित जो आगरा शहर की राजनगर बस्ती में रहता है। सुमित ने बताया कि मैं एक मोटर साईकिल रिपेयरिंग की दुकान में काम करता हूं। यहां मुझे बहुत परेशानी होती है क्योंकि कुछ लोग हमारे काम का फायदा उठाते हैं। अगर मेरा दुकानदार कहीं चला जाता है तो लोग मुझसे अलग अलग प्रकार का काम करवाते हैं जैसे गुटखा, सिगरेट, चाय इत्यादि मंगवाते हैं। अगर मैं उन्हें यह सब सामान लाकर भी दे देता तो वह मुझे जबरदस्ती गुटखा खाने को कहते

और मैं गुटखा खाने को मना करता हूं तो वह मेरे साथ जबरदस्ती करते। इस तरह मैं गुटखा भी खाना सीख गया जैसे मुझे गुटखा खाने की लत लग गई हो।

सुमित ने बताया कि मेरे पिता कुछ कामकाज नहीं करते और शराब पीते हैं। मेरी माता अकसर बीमार रहती हैं। हम तीन भाई बहन हैं और जिस घर में कोई कमाने वाला ही न हो तो उसका घर का खर्चा भला कैसे चलेगा। इस स्थिति में बच्चा या तो कोई कामकाज करता है या भीख मांगता या कबाड़ा बीनता है। ऐसे बच्चों के पास कोई अपनी खुद की पसंद नापसंद नहीं होती। इस तरह से बच्चों को मजबूरन काम करना पड़ता है। ऐसे में बच्चा स्कूल जाए या अपने पेट भरने के लिए कामकाज करे।

9 वर्षीय हेमन्त ने बताया कि मैं भी राजनगर बस्ती में रहता हूं। मेरे पिता जी का एक्सीडेंट हो गया था और इस हादसे में मेरे पिता जी उस लायक नहीं रहे कि कामकाज करके घर का खर्चा चला सके। मेरी एक छोटी दुकान है और मैं मोटर रिपेयरिंग की दुकान में भी काम करता हूं। जहां से मुझे रोज 25 रुपए मिलते हैं। मैं यह 25 रुपए अपनी माता को दे देता हूं। वह उन पैसों को घर के खर्चे में ले लेती है। हम बच्चे काम नहीं करना चाहते, लेकिन काम नहीं करेंगे तो खाएंगे क्या? हम बच्चों के भी कुछ सपने होते हैं, पर काम करना हमारी मजबूरी ही नहीं बल्कि जरूरत भी है।

एनसीपीसीआर के परामर्शक सुनील कुमार ने कहा बच्चों को सही दिशा दिखाने हेतु उठाये जायेंगे कदम

बातूनी रिपोर्टर तंजीम, रिपोर्टर शम्भू

निजामुद्दीन में चल रहे हार्म रिडक्शन सेंटर में नशा करने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों को उनका नशा छुड़ाने के लिए उन्हें अलग अलग कार्यक्रमों में व्यस्त रखा जाता है, जिससे उन बच्चों को कुछ समय के लिए नशे से दूर रखा जा सके और इस तरह उन्हें धीरे धीरे नशे से पूरी तरह आजाद किया जा सके। इन बच्चों की समस्याओं पर बातचीत करने तथा इनकी समस्या जानने हेत राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग से श्री सुनील कुमार जी आए। बढ़ते कदम के सदस्यों ने सुनील जी का स्वागत किया। उसके बाद सुनील जी ने बच्चों से बात की कि ज्यादातर बच्चे रेलवे स्टेशन पर ही क्यों आते हैं तो बच्चों ने बताया कि घर में हमारे माता पिता हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं, इसी कारण से हम घर से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं, क्योंकि हम जब अपने घर से भाग कर आते हैं तो हमारे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं होता है। हमारे पास पेट भरने के लिए पैसे भी नहीं होते, जिससे हम अपना पेट भर सकें।

इसलिए हम रेलवे स्टेशनों पर आ जाते हैं, क्योंकि स्टेशन एक ऐसी जगह होती है जहां हमें खाने के लिए खाना आसानी से मिल जाता है तथा यहां पर हम कोई न कोई काम करके पैसे भी कमा लेते हैं। रेलवे स्टेशन पर हम बच्चों को बहुत समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। लोग हमें धुतकारते हैं, घृणा की नजरों से देखते हैं, कोई भी हम बच्चों से इज्जत से बात नहीं करता और बच्चों को पुलिस वालों के भी डंडे खाने पड़ते हैं। यह सब पीड़ा सहकर हम अपना जीवन व्यतीत करते है। स्टेशनों पर हम जो स्थिति देखते हैं, हम भी उसका शिकार हो जाते हैं। इस दौरान हम बच्चे नशे की चपेट में भी आ जाते हैं, क्योंकि रेलवे स्टेशनों के आसपास बच्चों को नशीले पदार्थ आसानी से मिल जाते हैं।

उसके बाद सुनील जी ने बच्चों की सभी बातों पर गौर करते हुए अपने बारे में बताया कि मैं रेलवे स्टेशन का सलाहकार बना था। सलाहकर बनकर मैंने बहुत काम किया, जैसे जो लोग इंटरनेट से ऑनलाइन टिकट बुकिंग करते थे, उस टिकट को मैं ही फाइनल करता था। रेलवे की ऑनलाइन टिकट बुकिंग सुविधा की शुरूआत मैंने ही की थी। इस सुविधा के चलते देशभर के लोग आज ऑनलाइन टिकट बुकिंग करते हैं। इस तरह मैंने बहुत कुछ किया है। अब मैं रिटायर हो चुका हूं पर मुझे बच्चों से बहुत स्नेह है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग से मुझे जुड़े केवल 15 दिन हुए हैं। मुझे इसलिए यह मौका मिला क्योंकि मैंने पहले रेलवे में बहुत काम किया है और इस वजह से ज्यादातर लोग मुझे जानते होंगे। इसलिए मुझे यहां आकर यह कार्य दिया गया है कि जिस जगह ज्यादातर बच्चे नशा करते हैं या अपने घरों से भागकर आ जाते हैं, उस जगह का मुझे स्केच बनाना है, जहां ज्यादा बच्चे पाए जाएंगे, वहां हर एक जगह पर एक एक कार्यकर्ता होगा। जो यह ध्यान रखेगा कि बच्चे अगर अपने घर से भागकर आ रहे हैं तो उन्हें उस जगह से हटाकर किसी दूसरी जगह रखा जाएगा, जहां वह बच्चे किसी भी गलत संगत में न फंसे। यह जानकरी प्राप्त करके बढ़ते कदम के सदस्य बहुत खुश हुए और कहा कि सर अगर ऐसा हो गया तो हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों की स्थिति में कुछ सुधार लाया जा सकेगा।

पानी भरने के दबाव में बच्चे हो रहे शिक्षा से दूर

बातूनी रिपोर्टर कुंदन, रिपोर्टर चांदनी

जवाहर कैंप कीर्ती नगर की झुग्गी झोपड़ियों में रह रहे कम से कम 100 बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं। क्योंकि उन्हें पानी भरना पड़ता है। इन बच्चों का पूरा समय पानी भरने में निकल जाता है और वह स्कूल नहीं जा पाते। बालकनामा की पत्रकार चांदनी ने कीर्ती नगर जवाहर कैंप में जाकर खुद इस समस्या के बारे में जाना। बच्चों से मिलकर बातचीत की और पूछा कि आप स्कूल क्यों नहीं जा रहे हो तो बच्चों ने बताया कि वह पानी की वजह से स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। क्योंकि हमें रोज जवाहर कैंप से कीर्ती नगर जाना पड़ता है पानी भरने के लिए। चांदनी ने पूछा कि जवाहर कैंप में ऐसे कितने बच्चे होंगे जो सिर्फ पानी की वजह से स्कूल नहीं जा रहे हैं। बच्चों ने बताया कि ऐसे यहां बहुत बच्चे हैं जो स्कूल नहीं जा रहे हैं। हमारे यहां बच्चों का स्कूल में दाखिला तो हो गया है पर वह स्कूल नहीं जा पाते हैं क्योंकि यहां पानी की बहुत जरूरत है। अगर हमने पानी नहीं भरा तो हमें पीने के लिए पानी नहीं मिलेगा और हम पानी के बिना खाना कैसे बनाएंगे। फिर चांदनी ने पूछा कि आप क्या चाहते हो जिससे आप अपने स्कूल जा सको तो 13 वर्षीय अंकुर ने कहा कि जैसे सरकार ने हर घर में मीटर लगवाएं हैं वैसे ही वह पानी

के नल या पानी की टंकी घरों में लगवा दे, तो हम बच्चों के लिए बहुत अच्छा होगा। क्योंकि हमारे यहां पानी की बहुत परेशानी होती है और इस परेशानी की वजह से न तो हम अपने कपड़े धो पाते हैं और न ही नहा। हम बच्चे करें तो क्या करें। चांदनी ने कहा कि आपके यहां जब पानी की इतनी परेशानी है तो आपके यहां पानी का टैंकर तो आता होगा। तो अंकुर ने बताया कि पानी का टैंकर आता तो है पर वह टैंकर कीर्ती नगर में ही आता है और वह भी हमारे लिए बहुत दूर पड़ता है। अगर हम वहां पानी भरने के लिए चले भी जाते हैं तो हमें पानी नहीं मिलेगा, क्योंकि वहीं के लोग ही बहुत हैं पानी भरने वाले इसलिए हमें पानी नहीं मिलता अगर हम बच्चों के लिए सरकार कुछ करना चाहती है तो वह हमारे यहां पानी के नल या टंकी लगवा दें। हमे पानी की बहुत जरूरत है। हमें फिर इस तरह से पानी भरने के लिए रोज रोज इतनी दूर नहीं जाना पड़ेगा।

लखनऊ में बाल मजदूरी की बदरंग तस्वीर

पृष्ठ 1 का शेष

हाथों से बड़ी बड़ी मछलियां काटकर बेच रही हैं और उन्हें जरा भी भय नहीं लग रहा था। इनके आगे एक लोहे से बना तेज धार का बड़ा सा चाकू भी रखा हुआ था, जिससे यह लड़कियां मछली को काटकर बेच रही थी।

जिस उम्र में इन लड़कियों के हाथों में कॉपी, किताब और कलम होनी चाहिए, उस उम्र में इनके हाथों में बड़े बड़े चाकू हैं। जिससे यह बच्चियां मछलियां काटती हैं और बेचती हैं। इतनी कम उम्र में यह लड़कियां इतना खतनांक काम कर रही हैं। जब सलाहकार ने बच्चों से पूछा कि वह दिनभर क्या करते हैं तो उन्होंने बताया कि हम अपने माता पिता के साथ यह काम करते हैं, उसके बाद हम अपने घर का काम करते हैं। इस बात पर सलाहकार ने कहा कि आप स्कूल में पढ़ने क्यों नहीं जाते तो बच्चों ने कहा कि कोई हमें ठीक से नहीं पढ़ाता और न ही हमसे ठीक से बात करता है। हमारी कालोनियों में बहुत से लोग हमसे मिलने आते हैं और यह कहकर वापस चले जाते हैं कि हम आपको

पढ़ाने के लिए आएंगे, लेकिन अगले दिन कोई भी नहीं आता। कोई कोई अगर हमें पढ़ाने आते भी हैं तो वह ज्यादा दिन टिक नहीं पाते, क्योंकि वह हमसे घृणा करते हैं। इसलिए हमसे घुलमिल नहीं पाते।

वह कहते है कि हमारे अंदर मछली की बदबू आती है, इसलिए कुछ बच्चे इस वजह से स्कूल भी नहीं जाते और वैसे भी अगर हम काम नहीं करेंगे तो खाएंगे क्या? बच्चों ने कहा कि अगर कोई हमें पढ़ाने आए तो हम जरूर पढ़ेंगे। यह जानकर सलाहकार को बहुत दुख हुआ कि अभी भी बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है। जब उत्तर प्रदेश की राजधानी में ही बाल मजदूरी की ऐसी तस्वीरें देखी जा रही हैं, तो जरा सोचिए कि आसपास के जिलों में क्या हाल हो सकता है। कहते हैं कि अगर सच्चाई को परखा जाए तो हमें बच्चों के नजदीक जाकर उनके बारे में गहराई से पता लगाने से ही समस्या हल निकाला जा सकता है और अगर हम सबने एकसाथ मिलकर जमीनी स्तर पर काम किया तो इस बाल मजदूरी के मुद्दे को रोका जा सकता है। इसके साथ साथ बच्चों की जरूरत पर ध्यान देना होगा, जिससे उन्हें बाल मजदूरी से बचाया जा सकता है।

हर साल ठण्ड से बचने के लिए मुंबई की ओर बच्चे करते हैं पलायन

बातूनी रिपोर्टर रुस्तम, रिपोर्टर ज्योति

दिल्ली शहर में रह रहे पुल के नीचे बच्चे अखिर क्यों दिल्ली छोड़कर दूसरे शहरों में जा रहे है। इस बात पर छानबीन करने हेतु जानकारी के लिए बढ़ते कदम के सदस्यों ने अपनी विजिट के दौरान पता लगाया कि पुल के नीचे रहने वाले बच्चों की संख्या कम हो गई है। वह बच्चे दूसरे शहर में क्यों चले गए और कहां गए है। इस बारे में पता करने के लिए सदस्यों ने फिर से एक विजिट का दौरा किया और रह रहे बच्चों से मुलाकात की और उनसे पूछा कि बाकी बच्चे कहां गए हैं जो पुल के नीचे तुम्हारे साथ रह रहे थे तो बच्चों ने बताया कि हमारे साथ जो बच्चे रह रहे थे वह ठंड से बचने के लिए दूसरे शहर मुम्बई चले गए हैं और हम भी मुम्बई जा रहे हैं। पत्रकार से 16 वर्षीय अरसद ने बताया कि भईया बच्चों के लिए रात को रहने के लिए दिल्ली में कोई व्यवस्था नहीं है इसलिए बहुत सारे बच्चे दूसरे शहर मुम्बई और हरिद्वार तथा फरीदाबाद चले गए, क्योंकि दिल्ली में ठंड बहुत हो रही है। सुबह में जो कोहरा गिरता है तो बहुत तेज ठंड लगती है और ठंड से बचने के लिए हमारे पास कोई सुविधा नहीं है। इसलिए जहां पर ठंड कम होती है वहीं पर बच्चे जा रहे हैं और मुम्बई में इस वक्त ज्यादा ठंड नहीं है इसलिए बच्चे मुम्बई चले गए।

पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि तुम्हें कैसे पता है कि दूसरे शहर में ठंड कम होती है तो 13 वर्षीय राहुल ने बताया कि मुम्बई से कल एक व्यक्ति आया है, जिसने हमें बताया कि मुम्बई में ठंड बहुत कम है इसलिए हम बच्चे मुम्बई जा रहे हैं और वैसे भी जब दिल्ली में ज्यादा ठंड पड़ती है तो हम बच्चे हर साल ऐसे ही अपने आप को ठंड से बचाते हैं। दूसरे शहरों में जाकर कुछ दिनों के लिए बस जाते हैं जैसे ही दिल्ली में ठंड कम होने लगती है वैसे ही हम दिल्ली में अपनी अपनी जगहों पर वापस आकर रहने लगते हैं। उसके बाद 14 वर्षीय जावेद ने कहा कि देश तो 66वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है, मगर हम बच्चों के लिए अभी भी आजादी नहीं है। सरकार हमारी मदद नहीं करती है। हम बच्चे यही चाहते हैं कि सरकार हम बच्चों की मदद करे। हमारे लिए सुविधा प्रदान करें। ताकि हम अपने शहर को छोडकर दूसरे शहरों में ना जाएं। जरा सोचो जब बच्चे अकेले मुम्बई शहर में जा रहे हैं तो उनके साथ क्या क्या घटना होने की आशंका हो सकती है। कितने ऐसे बच्चे होंगे जो इस तरह सफर में शोषण का शिकार होते होंगे। इस बात पर अगर गौर किया जाए तो बहुत गंभीर मुद्दे हमारे सामने आएंगे और इस वजह से बहुत संख्या में पीड़ित भी होते हैं। इन मुद्दों पर हमारी सरकार गंभीरता से विचार करे और ज्यादा से ज्यादा बच्चों तक सुविधाएं पहुचाएं।

नूरनबी की हिम्मत को सलाम

रिपोर्टर ज्योति

13 वर्षीय नूरनबी अपने माता पिता के साथ खादर में रहता है। उसके पापा का नाम जहरूल इस्लाम है और उसकी माता का नाम नूर खातून है। उसके पिता जी कोठी में काम करने जाते हैं और उसकी माता जी घरों में काम करने जाती हैं। नूरनबी खादर से लाजपत नगर मार्किट में कबाड़ा बीनने के लिए आता है। उसके बाद वह चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ने भी जाता है। इसके साथ साथ वह बढ़ते कदम का होनहार सदस्य भी है एक दिन की बात है नूरनबी कबाड़ा बीनने के लिए लाजपत नगर मार्किट गया। लाजपत नगर की मार्किट में नूरनबी रोज देखता था कि एक 16 वर्षीय लड़की के साथ दो लड़के झेड़झाड़ करते थे, क्योंकि वह वहीं कबाड़ा चुनने के लिए आती थी और इस बात का वह दोनों लड़के फायदा उठाते थे। लेकिन जब उन लड़कों की हरकत हद से ज्यादा बढ़ने लगी तो नूरनबी के अंदर आत्मविश्वास जागा और दौड़ कर उन दोनों लड़को के पास गया और बोला कि तुम लोग इस लड़की को क्यों तंग करते हो तो उन्होंने मुझे एक छोटा नादान बच्चा समझते हुए कहा कि तुम यहां से भाग जाओ नहीं हम तुम्हें मारेंगे।

उसके बाद भी नूरनबी उनसे डरा नहीं बल्कि उनसे कहा कि मैं बढ़ते कदम का सदस्य हूं, अगर तुम उस लड़की को परेशान करना बंद नहीं करोगे तो मैं पुलिस को बुलाउंगा। लेकिन उन दोनों लड़को ने नूरनबी की बात नहीं मानी और उसे वह दोनों डराने धमकाने लगे। नूरनबी हार मान कर पुलिस को बुलाने ही जा रहा था और वह लाजपत नगर मार्किट के पुलिस स्टेशन से जैसे ही पुलिस स्टेशन की ओर बढ़ा वह दोनों लड़के पुलिस के डर से वहां से भाग गए। फिर उस लड़की ने नूरनबी का धन्यवाद कहा। क्योंकि वह दोनों लड़के उसे रोज मार्किट में आकर झेड़ते थे और अश्लील निगाहों से देखते थे। नूरनबी की हिम्मत और बहादुरी की वजह उस दिन के बाद से ही उन दोनों लड़कों ने लाजपत नगर मार्किट में आना बंद कर दिया अब वह लड़की बहुत खुश है।

कामकाजी बच्चों से ठेकेदार को हो रहा है मुनाफा

बातूनी रिपोर्टर दीपक, सोनू, रिपोर्टर ज्योति

सरोजनी नगर मार्किट में छोटे छोटे बच्चे पापड़ बेचने का काम रहे हैं। इन बच्चों से जब बालकनामा के रिपोर्टर मिले तो इन बच्चों में से एक बहुत पुराना बाल साथी आया, जो बालकनामा के रिपोर्टर के बारे में अच्छे से जानता था। उसने रिपोर्टर को सभी बच्चों का नाम परिचय करवाया। नाम परिचय करवाने के बाद उसने रिपोर्टर को बताया कि हम कम से कम 15 बच्चे ऐसे हैं, जिनकी उम्र लगभग 12 से 13 वर्ष तक की है। यह सभी बच्चे सरोजनी नगर मार्किट में पापड़ बेचने के लिए रोज आते हैं। हम बच्चों का एक ठेकेदार है जो बिहार से आया हुए है। वह हमसे पापड़ बेचने का काम करवाता है। वह हमें इस काम के प्रतिमाह दो हजार रुपए देता है इसलिए हम बच्चों को कैसे भी करके प्रतिदिन में सौ से दो सौ रुपए तक का पापड़ बेचना पड़ता है।

अगर हम बच्चे प्रतिदिन दो सौ रुपए का पापड़ नहीं बेच पाते हैं तो हमारा ठेकेदार हमारे प्रतिमाह की तनख्वाह कम कर देता है, जिससे हमारा बहुत नुकसान होता है। हम अपने ठेकेदार से पापड़ बेचने के लिए मादीपुर से लाते हैं। पत्रकार ने पूछा कि वह बच्चों से ही काम क्यों करवाता है तो बच्चों ने बताया कि वह बच्चों को ही पापड़ बेचने के लिए रखता है क्योंकि अगर वह बड़े व्यक्ति को पापड़ बेचने के लिए पगार पर रखेगा तो वह अपनी पगार के उससे ठेकेदार से ज्यादा पैसे लेगा। इसलिए वह बड़े व्यक्तियों को काम पर नहीं रखता । छोटे छोटे बच्चों से वह कम पैसो में ही काम करवा लेता है। जिससे ठेकेदार को बहुत मुनाफा होता है।

बच्चों ने जाना शिक्षा का महत्व

शम्भू

निजामुद्दीन सेंटर में रेलवे स्टेशन पर काम कर रहे 20 बच्चों ने ग्रुप सेशन मीटिंग करके महत्वपूर्ण निर्णय लिए कि सभी बच्चे नशे की लत को छोड़कर पढ़ाई करेंगे। इस मीटिंग में चेतना संस्था की कार्यकर्ता श्रीमती मंजुला जी ने सभी बच्चों को समझाया कि पढ़ाई करना क्यों जरूरी है । उसके बाद बच्चों ने खुद से ही सुझाव दिया कि हम जब पढ़ाई करेंगे तो हमें आगे आने वाले समय में एक अच्छी नौकरी मिलेगी, जिससे हम बच्चे अच्छे पैसे कमा सकेंगे। इन पैसों से हम अपना जीवन अच्छी तरह गुजार सकते हैं। हम बच्चों को कबाड़ा बीनना नहीं पड़ेगा, न ही हमें भीख मांगनी पड़ेगी और कोई भी व्यक्ति हमारे साथ दुर्व्यवहार नहीं करेगा। हमें सम्मान मिलेगा। उसके बाद बच्चों ने दो ग्रुप बना, पहले ग्रुप को कहा गया कि उन्हें ग्रुप में रहकर शिक्षा प्राप्त करने के बाद कैसा जीवन होता है उसके बारे में बताएंगे और दूसरा जो बच्चे पढ़ाई नहीं करते उनका जीवन कैसा होता है उसके बारे में बताएंगे। सभी बच्चों ने अपने ग्रुप में बैठकर इस बारे में चर्चा की। उसके बाद एक एक करके सभी ने अपनी अपनी बातें रखी कि पढ़ाई करने से हमें जानकारी प्राप्त होती है कि हम बनी योजनाओं का फायदा ले सकते हैं, हमें सम्मान मिलेगा और कोई हमारा इस्तेमाल नहीं कर सकेगा। फिर दूसरे ग्रुप ने बताया कि जो बच्चे पढ़ाई नहीं करते उनका भविष्य बड़े होने तक एक जैसा ही रहता है वह जो काम करते हैं, बस उसी काम तक सीमित रह जाते हैं और दूसरे से मदद लेते हैं। वह ऐसा जीवन गुजारते हैं, जिसमे हर दिन रोजमर्रा से काटना पड़ता है। ऐसे में वह किसी भी योजना का फायदा भी नहीं ले पाते क्योंकि उनके पास जानकारी नहीं होती और इस कारण वह हर दिन किसी न किसी समस्या का शिकार होते रहते हैं।

लेकिन जब हम पढ़ाई लिखाई करते हैं, तब हम इन सभी परेशानियों से धीरे धीरे मुक्त होते जाते हैं। इसलिए हम सभी बच्चों को नशे की लत छोड़कर शिक्षा प्राप्त करना है और अपना जीवन उज्जवल बनाना है। फिर सभी बच्चों ने चर्चा करने के बाद निर्णय लिया कि वह धीरे धीरे अपना नशा छोड़ने की कोशिश करेंगे और मन लगाकर पढ़ाई करेंगे जितने भी बच्चे ओपन जगहों में रहते हैं, उन्हें भी शिक्षा के लिए जागरूक करेंगे और जो बच्चे नशा करते हैं, उन्हें भी नशा छोड़ने के लिए सीख देंगे। बच्चों ने यह निर्णय लेकर मीटिंग का समापन किया।

दिल्ली में राजस्थान का नजारा, पानी भरने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर संतोष, रिपोर्टर चांदनी

बालकनामा के पत्रकार चांदनी और शम्भू ने अपनी विजिट के दौरान देखा कि बदरपुर बॉर्डर में बसी एक बस्ती सांसी कैंप में रह रहे बच्चे पानी भरने के लिए बदरपुर बॉर्डर के इस पार से उस पार जा रहे थे, जहां कि सड़कों पर ट्रैफिक भी बहुत तेजी से चलता है। इसके बाद भी इन बच्चों के सर पर 15 से 20 लीटर पानी का भरा डिब्बा लदा रहता है जिसे यह बच्चे बदरपुर बॉर्डर से सांसी कैंप बस्ती तक पैदल लेकर आते हैं। यह देख पत्रकार चांदनी ने इन बच्चों से बातचीत की, कि तुम रोज इतनी दूर से पानी भरने क्यों आते हो, तो बच्चों ने अपनी परेशानी के बारे में बताया कि हमें सांसी कैंप में पानी नहीं मिलता क्योंकि यहां पानी की सुविधा नहीं है।

इसलिए हम सभी बच्चे पानी के लिए इधर उधर भटकते रहते हैं। 15 वर्षीय बबीता ने कहा कि सरकार को जब हमारी जरूरत पड़ती है तो वह हमारे पास वोट मांगने आ जाती है और वोट ले लेती है, लेकिन हमें क्या परेशानी आ रही है यह जानने की कोशिश नहीं करती। यहां के 10 साल की उम्र से लेकर 16 साल तक की उम्र के बच्चे सांसी कैंप से बदरपुर बॉर्डर पर पानी भरने को जाते हैं। हम बच्चों को कम से कम तीन रोड पार करने होते हैं और हर एक बच्चे के पास 20 लीटर के पानी के डिब्बे का भार उठाना पड़ता है। सभी आने जाने वाले लोग हमें देखते हैं। लेकिन कोई भी यह जानने की कोशिश तक नहीं करता कि कितनी मेहनत के बाद हम बच्चों को पानी मिलता है।

हमारे यहां पीने का पानी नहीं आता है और इसलिए हमें यहां पानी भरने आना पड़ता है। फिर भी हमें यहां आकर कभी कभी पानी भी नसीब नहीं होता है, जिस दिन हमें पानी नहीं मिलता उस दिन हम प्यासे रह जाते हैं या फिर गंदा पानी पीना पड़ता है। जिसकी वजह से हम बीमार पड़ जाते हैं। फिर पत्रकार ने कहा कि क्या यहां पानी का टैंक नहीं आता है तो बच्चों ने बताया कि टैंक नहीं आता हमने बहुत कोशिश की है इसके लिए पर कोई फायदा नहीं हुआ। अगर कभी कभी टैंक आता भी है तो महीने में एक बार आता है, लेकिन हम बच्चे बदरपुर बॉर्डर से ही पानी भरने के लिए जाते हैं। अगर हमारे यहां पर रोज पानी का टैंक आए तो हम बच्चों को इतनी दूर पानी भरने नहीं जाना पड़ेगा।

शैक्षणिक प्रमाण पत्र पाकर खुश हुए सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर तंजीम, राजा, रिपोर्टर शम्भू

आज निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के जीआरपी थाने में दिल्ली पुलिस, जीआरपी हजरत निजामुद्दीन के सहयोग से 'शैक्षिक प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीसीपी, रेलवे मेट्रो श्री मिलिंद दुबेरे, विशेष किशोर पुलिस इकाई की ऑफिसर सरिता जी, सीनियर स्टेशन मैनेजर श्री आनंद प्रकाश, कालका जी बाल कल्याण समिति के सदस्य थे। इस कार्यक्रम में निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर रहने व काम करने वाले लगभग 45 सड़क व कामकाजी बच्चों ने भाग लिया।

दिल्ली पुलिस व संस्था के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को आगे बढ़कर पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करना था। ज्ञातव्य हो कि दिल्ली पुलिस के खोज कार्यक्रम के तहत 14 नवंबर, 2014 को बाल दिवस के अवसर पर इस केंद्र की शुरूआत की गई थी। इस अनूठे कार्यक्रम के तहत स्टेशन पर गुजर बसर करने वाले 20 से 25 बच्चे रोज जीआरपी पुलिस स्टेशन पर चेतना संस्था के ओपन बेसिक एजूकेशन के तहत पढ़ने के लिए जाते हैं और जीआरपी पुलिस इन बच्चों के लिए पढ़ाई हेतु उचित सुविधाएं मुहैया कराने में मदद कर रही है। इस कार्यक्रम के तहत बच्चों द्वारा डांस, गाना, नाटक व विभिन्न प्रकार के रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। इस कार्यक्रम के संचालन में एस.एच.ओ. श्री सुनील जी ने विशेष योगदान दिया। इन

कार्यक्रमों के द्वारा न सिर्फ बच्चों ने अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया, बल्कि सभा में बैठे सभी दर्शकगणों को अपने दांतों तले उंगलियां दबाने पर मजबूर कर दिया। 15 वर्षीय खुशी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मैं प्रमाण पत्र पाकर बहुत खुश हूं। अब मैं और पढ़ना चाहती हूं और आगे बढ़ना चाहती हूं। डीसीपी, रेलवे मेट्रो श्री मिलिंद दुबेरे ने कहा कि, ''दिल्ली पुलिस पूर्ण रूप से बच्चों की सुरक्षा के लिए संवेदनशील है और दिल्ली पुलिस द्वारा इन बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। इस प्रकार के प्रयासों से हम इन बच्चों को अपराध की दुनिया से बाहर निकालकर देश का एक अच्छा नागरिक बनाना चाहते हैं। 16 साल का राजा (परिवर्तित नाम) जीआरपी थाने में चलाई जा रही एजूकेशन क्लासेस में पढ़ने जाता है। राजा ने बताया कि पहले मुझे पढ़ना भी अच्छा नहीं लगता था और पुलिस से भी बहुत डर लगता था। लेकिन अब मैं बहुत खुश हूं कि आज मुझे पुलिस के इतने बड़े ऑफिसर के हाथों से यह प्रमाण पत्र मिला है। अब तो मैं खूब मन लगाकर पढ़ाई करूंगा। बढ़ते कदम के पोषक श्री संजय गुप्ता ने बताया कि पुलिस व बच्चों के बीच का संबंध बहुत ही मैत्रीपूर्ण है। श्री संजय गुप्ता ने कहा कि यह अपने आपमें एक अनूठा मॉडल है और यदि यह प्रयास सफल रहा तो इस मॉडल को आसानी से दिल्ली के सभी पुलिस स्टेशनों में संचालित किया जा सकता है। विशेष किशोर पुलिस इकाई की ऑफिसर सरिता जी ने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे काम के साथ साथ पढ़ाई कर रहे हैं। हमें इन बच्चों का हौसला बढ़ाना चाहिए, ताकि वे यहां से निकलकर एक नए मुकाम तक पहुंच सकें।

मकान मालकिन के दुर्व्यवहार से बचाया यासमीन को

बातूनी रिपोर्टर यासमीन, रिपोर्टर चांदनी

15 वर्षीय यासमीन नोएडा सेक्टर 27 में अपनी माता के साथ किराए के मकान में रहती है। यासमीन के घर की स्थिति ठीक न होने के कारण वह अपनी माता के साथ कोठी में काम करने जाती है। जिससे वह अपने घर का किराया और खाना खर्चा करती हैं। चांदनी अपनी विजिट के दौरान यासमीन से मिली। यासमीन ने चांदनी से अपनी समस्या के बारे में बताया कि वह कुछ दिनों से बीमार है और वह जिस कॉलोनी में किराए के मकान में रहती है, उसका मकान मालिक का व्यवहार यासमीन के प्रति ठीक नहीं है, क्योंकि उसका मकान मालिक दारू पीकर यासमीन को गालियां देता है उसके

साथ बदसलूकी करता है, उसे धमकाता है और उसकी मकान मालकिन भी उसे बुरा भला कहती है। एक दिन तो उसने यासमीन को थप्पड़ भी मारा कहा कि अभी मकान खाली करो दो।

यह सुनकर यासमीन घबरा गई और कहने लगी, अगर मकान खाली कर दिया तो हम कहां जाएंगे। उसके बाद भी मकान मालकिन यासमीन पर गुस्सा होती रही। यासमीन ने यह सभी बाते चांदनी से बताई और कहा कि मैं क्या करूं। तो चांदनी ने यासमीन से कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है, तुम डरो मत।

उसके बाद चांदनी ने 100 नम्बर पर फोन किया। पुलिस को बताया कि मैं सड़क एवं कामकाजी बच्चों के संगठन से चांदनी बोल रही हूं। उसके बाद यासमीन की समस्या के बारे में बताया और मकान मालिक की शिकायत कर सभी जानकारी पुलिस को दी। पुलिस आई और मकान मालिक को डांटा और कहा कि अगर आगे से ऐसा हुआ तो हम तुम्हें जेल ले जाएंगे। मकान मालिक के पापा ने यासमीन से माफी मांगी और कहा कि हमें माफ कर दो आज के बाद हम तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे। अब यासमीन को कोई परेशान नहीं करता। यासमीन ने बढ़ते कदम संगठन का धन्यवाद किया।

चांदनी ने वहां रह रहे सभी बच्चों को समझाया कि अगर आपको कोई भी व्यक्ति परेशान करे तो आप इसी तरह खुद से ही पुलिस को फोन करके सही जानकरी देकर अपनी मदद कर सकते हो। लेकिन याद रहे कोई भी आगे से आपको किसी भी तरह परेशान करे तो आप पुलिस 100 नम्बर या 1098 जो सिर्फ बच्चों के लिए है, यह दोनों नम्बर निःशुल्क हैं। यह जानकारी पाकर बच्चे बहुत खुश हो गए और कहने लगे कि आगे से हम बच्चे यह बात याद रखेंगे।

स्ट्रीट चिल्ड्रन के लिए पुलिस बनी सेंटा क्लॉज

बातूनी रिपोर्टर रुबीना, सोनू, रिपोर्टर शम्भू

बच्चों को घुमाया ताजमहल और बांटें गरम कपड़े

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर आज पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर जीआरपी, दिल्ली पुलिस, पीपा वेव और चेतना संस्था के सहयोग से रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 40 बच्चों ने भाग लेकर और गरम कपड़े पाकर बहुत खुश हुए। इस अवसर पर इन बच्चों को डांस करने, गाना गाने, बातें करने और क्रिसमस की खुशियां मनाने का मौका मिला। सभी बच्चे यह अवसर पाकर बहुत खुश हुए।

ज्ञातव्य हो कि निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के 30 बच्चों, जिन्होंने ओपन बेसिक एजूकशन की परीक्षा प्राप्त की थी, उन्हें निजामुद्दीन की जीआरपी पुलिस द्वारा चेतना संस्था के

सहयोग से आगरा का ताजमहल घुमाने ले जाया गया।

13 वर्षीय रूबीना (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''मैं भी आगरा का ताजमहल घूमने गई और मुझे वहां जाकर बहुत अच्छा लगा। मेरा सपना था कि मैं भी कभी ताजमहल देखूं और मेरे इस सपने को जीआपी पुलिस ने साकार कर दिया।''

वहीं दूसरी ओर पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आयोजित किए गए इस रंगारंग कार्यक्रम में पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने वाले 12 वर्षीय रूस्तम ने लोरी गाकर अपनी मां के प्रति अपना प्यार जाहिर किया तो उसे सुनकर इंस्पेक्टर सुजाता की आंखें नम हो गई।

इस कार्यक्रम में जीआरपी, दिल्ली पुलिस की इंस्पेक्टर सुजाता और ज्यूवनाइल वेलफेयर ऑफिसर श्री राजेंद्र कुमार जी ने सेंटा क्लॉज की भूमिका निभाते हुए 40 बच्चों को गरम कपड़े इनर, जैकेट, मोजे, टोपी इत्यादि गिफ्ट के रूप में दिए।

लखनऊ में बढ़ रही है सड़क एवं कामकाजी बच्चों की संख्या

पृष्ठ 1 का शेष

जा रहे हैं, क्यों सरकार आज भी नकामयाब है, जो बच्चों को बाल मजदूरी के चंगुल से आजाद नहीं करवा पा रही है।

सर्वे के दौरान निकल कर आए आंकड़े इस प्रकार हैं:-

(1) अकबर नगर कुकरेल में केवल 2500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 1000 बच्चे हैं और इन में से मात्र 10% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं, रिक्शा चलाते हैं, कारपेंट्री का काम करते हैं और कुछ बच्चे घरों में काम करते हैं और भीख मांगने जाते हैं।

(2) संजय गांधी पुरम में 500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 250 बच्चे हैं। इनमे से केवल 5% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं, घरों में काम और भीख मांगने जाते हैं।

(3) सईद नगर पुराना किला सदर फ्लाई ओवर के नीचे 200 लोगों की जनसंख्या है, इनमें से मात्र 14% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा का, मजदूरी तथा घरों में काम करते हैं और भीख मांगने जाते हैं।

(4) चौक फूल मंडी बड़ा इमाम बाड़ा में 5000 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 3500 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 7% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा का काम, मजदूरी, घरों में काम, भीख मांगने, शादी पार्टी का काम काम करते हैं।

(5) मूंगफली मंडी में 2500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 1500 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 7.5% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे मूंगफली बेचने का काम करते हैं।

(6) बालू अड्डा गोमती नगर में 3500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 2500 बच्चे है और इनमें से मात्र 8.3% बच्चे स्कूल जा रहे हैं बाकी बच्चे कबाड़ा बीनने का काम, मजदूरी और रिक्शा चलाने का काम करते हैं।

(7) के.के.सी.महावीर पुरी में 2500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 1500 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 5% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा का काम, मजदूरी, घरों में कामए शादी पार्टियों में काम करते हैं।

(8) रामपुर मोहल्ला नेहर किनारा में 1000 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 700 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 14% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा का काम, मजदूरी, घरों में काम, भीख मांगना, शादी पार्टियों में काम करते हैं।

(9) चितवापुर खाटकियाना में 1500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 800 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 5.33% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे मजदूरी और घरों में काम करने जाते हैं।

(10) चितवापुर पेजवा नेहर किनारा में 1500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 800 बच्चे हैं और इन में से मात्र 5.33% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे मजदूरी और घरों में काम करने जाते हैं।

(11) हबीब नगर मोती झील में 5000 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 3500 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 11.33% बच्चे स्कूल जा रहे हैं बाकी बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं।

(12) पराग डेरी ट्रांसपोर्ट नगर में

1200 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 700 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 4.66% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी उपले बनाने और जानवरों की देखभाल का काम करते हैं।

(13) बंसल बाग बंगला बाजार में 600 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 400 बच्चे हैं और इनमें से कोई भी बच्चा स्कूल नहीं जाता।

(14) बंसल बाग बंगला बाजार सरम विहार नगर नंबर 1 में 500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 3500 बच्चे हैं और इनमें से 7% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे मछली बेचने का काम करते हैं, कबाड़ा बीनने का काम करते हैं और रिक्शा चलाते हैं।

(15) सरम विहार नगर नम्बर 2 में 8000 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 5000 बच्चे हैं और इनमें से 10% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा बीनना, मजदूरी करना, भीख मांगना, रिक्शा चलाना और मार्किटों में मछली बेचने का काम करते हैं।

यह आंकड़े तो सिर्फ 15 बस्तियों के हैं, लेकिन शायद हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते कि हमारे पूरे देश में बच्चे कितनी संख्या में काम कर रहे होंगे। इन आंकड़ों से पता चलता है कि ज्यादातर बच्चे ही काम कर रहे हैं और उन बच्चों से काम करवाया जा रहा है।

बच्चों के हेल्पलाइन नंबर

चाइल्ड लाइन नंबर **1098**

पुलिस हेल्पलाइन नंबर **100**

ये दोनों ही नंबर टोल फ्री नंबर हैं। यदि आप किसी मुसीबत में हों तो दोनों ही नंबरों पर 24 घंटे में कभी भी फोन करके मदद ले सकते हैं

बेघर बच्चों को ठण्ड से बचाने के लिए गरम कपड़े बांटे

बातूनी रिपोर्टर संतोष, रिपोर्टर शम्भू

राजधानी दिल्ली में पड़ रही कड़ाके की ठंड से सड़कों, फुटपाथों, स्टेशनों व झुग्गी-झोपड़ियों में रह रहे बच्चों को बचाने के लिए दिल्ली के निजामुद्दीन, सराय काले खां और लाजपत नगर के सड़क एवं कामकाजी बच्चों को गरम कपड़े बांटे गए।

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के जीआरपी थाने के एस.एच.ओ. श्री सुनील कुमार ने स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को गरम कपड़े बांटे और कहा कि, ''संस्था द्वारा इन बच्चों के लिए किया जा रहा यह बहुत ही अच्छा प्रयास है। इससे न सिर्फ इन बच्चों को ठंड से राहत मिलेगी, बल्कि इन्हें बीमारियों से भी बचाया जा सकेगा।''

संस्था द्वारा 165 सड़क एवं कामकाजी बच्चों को गरम कपड़े इनर, टोपी, मोजे, जूते और जैकेट बांटे गए। गरम कपड़े पाकर 12 वर्षीय सीमा (परिवर्तित नाम) बहुत खुश हुई और कहा कि, ''मैं फ्लाईओवर के नीचे रहती हूं। हमारे पास गरम कपड़े नहीं थे, केवल एक पुराना कंबल है, जिससे हम अपना काम चला रहे हैं। लेकिन आज संस्था ने हम बच्चों को इतने सारे गरम कपड़े और जूते देकर हमें इस ठिठुरन से बचाने का बहुत ही अच्छा काम किया है।''

14 वर्षीय निजाम (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''वह इतनी ठंड में केवल एक पैंट व टीशर्ट में स्टेशन पर अपनी रात गुजार रहा था। वह यह कपड़े पाकर बहुत खुश है और कहता है कि अब मुझे इस कंपकपाहट से छुटकारा मिल जाएगा और ठंड से निजात मिल जाएगी।''

बढ़ते कदम के पोषक श्री संजय गुप्ता ने बताया कि, ''ठंड से बचना हर नागरिक का संवैधानिक अधिकार है, लेकिन सड़कों, फुटपाथों व स्टेशनों पर रह रहे इन मासूमों की दास्तां तो यही बयान कर रही है कि किस कदर इस अधिकार की अवहेलना की जा रही है। संस्था द्वारा ठंड से बच्चों को बचाने के लिए यह एक छोटी सी शुरूआत है। हमें उम्मीद है कि अधिक से अधिक सड़क एवं कामकाजी बच्चों को इसका लाभ मिलेगा।''

तोता-मैना संवाद

मानव तस्करी व बंधुआ मजदूरी के मुददे पर उत्तर प्रदेश में हुई चर्चा

तोता : उड़ते उड़ते एक पेड़ की डाल पर बैठ जाता है और मैना से कहता है कि और सुनाओ मैना क्या खबर है... ?

मैं तो अपनी खबर तुम्हें बाद में सुनाऊंगी पहले तुम बताओ

तोता : अरे मैना खबरे तो बहुत धमाकेदार है इस बार ..... ?

मैंना :ऐसी कौन सी खबरे हाथ लगी है जो तुम इतना खुश हो रहे हो

तोता : खुश क्यों न हूं खबर ही इतनी अच्छी है। तुम्हें पता है मैं इस बार खबर लेने कहां गया था... ?

मैंना : मुझे नहीं पता तोता तुम्हीं बताओ कहां गए थे.. ?

तोता : इस बार मैं खबर लेने उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में गया था। वहां पर मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी पर बहुत बड़ी मीटिंग आयोजित कि गई। इस मीटिंग में उत्तर प्रदेश के गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि और सरकारी विभागो के अधिकारी भी शामिल हुए।

मैंना : वाह तोता बहुत खूब जरा यह तो बताओ कि इस मीटिंग का मुख्य उद्देश्य क्या था.. ?

तोता : इस मीटिंग का मुख्य उद्देश्य था कि उत्तर प्रदेश को कैसे मानव तस्करी और बंधुआ मजदूर से मुक्त कराया जाए।

मैंना : तोता यह तो बड़ी ही अच्छी बात है क्योंकि इस मानव तस्करी में बच्चे और बड़े दोनों ही बड़ी संख्या में शमिल हो रहे हैं और शायद इस वजह से दिन पर दिन बाल मजदूरी की संख्या में भी बढ़ोतरी होती जा रही है।

तोता : यह तो बात एकदम सच है मैंना कि संख्या बढ़ती जा रही है मीटिंग में भी इस मुद्दे पर बहुत गंभीरता से चर्चा कि गई ?

मैंना : यह तो बडी दुख की बात है लेकिन तोता यह आंकड़े तो सिर्फ बिहार और उत्तर प्रदेश के हैं लेकिन जरा सोंचो हमारे पूरे देश में ऐसे कितने ही आंकड़े हैं जो हमारी सरकार के सामने नहीं आए है ?

तोता : हां मैना इसलिए तो यह मीटिंग कि गई है ताकि इस समस्या का समाधान किया जा सके ।श्रीमती नाहिद लारी खान (स्टेट कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स की सदस्य) उन्होंने कहा कि मॉडर्न स्लेवरी को तब तक जड़ से नहीं मिटाया जा सकता, जब तक हम सही दिशा में काम न करें। जब तक हम लोगों को इस बात की जानकारी नहीं देंगे कि यदि किसी बच्चे को किडनैप किया जाता है तो वो कैसे इसकी रिपोर्ट दर्ज कराएं और किस हेल्पलाइन नंबर पर फोन करके जानकारी दें। इसके लिए हमें अलग अलग प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम चलाने होंगे। उन्होंने कहा कि मैं आप सभी को आश्वासन देती हूं कि स्टेट कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स इसकार्य में पूरा सहयोग करेगा।

मैंना : अरे तोता छोड़ो भी यह तो सब कहने की बाते है लेकिन हकीकत में तो कुछ और ही होता है

तोता : मैंना तुम ऐसे कैसे कह सकती हो भला... ? तुम्हें पता भी है यह कार्य करने के लिए बहुत ही गंभीरता से चर्चा हो रही है क्योंकि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य श्रीमती रूपा कपूर जी ने कहा कि मॉडर्न स्लेवरी और बंधुआ मजदूरी पर रोकथाम करने के लिए हमें मानव तस्करी करने वाले लोगों को पहचानना जरूरी है क्योंकि तस्करी के शिकार लोगों के 46 प्रतिशत लोग उनकी ही जान पहचान के होते हैं। इसलिए हमें इसकी तह तक जाना चाहिए और पुलिस, कमीशन, गैर सरकारी संगठन, श्रम विभाग, एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग इत्यादि के साथ मिलकर काम करना होगा। उन्होंने बताया कि हमारे पास बच्चों को पुर्नवासित करने के लिए शेल्टर होम की कमी है और ऐसे बच्चों का पर्याप्त डाटा भी उपलब्ध नहीं है। इसलिए यदि उत्तर प्रदेश को तस्करी से मुक्त कराना है तो सबसे पहले इससे संबंधित नीतियों व कानूनों को जानना बहुत जरूरी है और "स्टॉप मॉडर्न स्लेवरी" की तर्ज पर एक सेंटर व हेल्पलाइन नंबर बनाया जाए, जिससे किसी भी समय मदद ली जा सके।

मैंना : हां तोता यह तो सच है कि इस मामले में ज्यादातर अपने ही जान पहचान व आसपास के लोग शामिल होते हैं जो इस कार्य को अंजाम देते हैं तथा बच्चों को भी बहला फुसलाकर गांवो और कस्बो से काम करने के लिए भेजते है और उन मासूम बच्चों को पता ही नहीं होता कि उनका किस प्रकार इस्तेमाल किया जाता है उन बच्चों से बेहिसाब काम कराया जाता है .. ?

तोता : हां मैंना तभी तो बच्चों का पता नहीं चल पा रहा है कि वह बाल मजदूरी कर रहे है या बंधुआ मजदूरी क्योंकि मानव तस्करी के साथ साथ बच्चे भी लाए जाते हैं जिनका पता नहीं चलता और वह इस तस्करी के चुंगल में आकर अलग अलग जगहों में काम करते नजर आते हैं।

मैंना : चाइल्डलाइन इंडिया फाउंडेशन के श्री अभिषेक पाठक जी ने बताया कि चाइल्डलाइन उत्तर प्रदेश के 32 जिलों में 24 घंटे काम कर रही है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ समय से जिस प्रकार से कानून व प्रशासन तस्करी को लेकर प्रोएक्टिव हुआ है, उसी प्रकार तस्करी करने वाले लोग भी बहुत प्रोएक्टिव हो गए हैं। धीरे धीरे वो तस्करी करने का तरीका बदल रहे हैं। उत्तर प्रदेश में तस्करी करने के लिए राजस्थान से लोग उस समय आ रहे हैं, जब खेतों में जुताई का काम चलता है। ऐसी ही एक घटना का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि अभी हाल ही में एक मामला ऐसा आया, जिसमें राजस्थान से लोग अपना ट्रैक्टर लेकर खेतों की जुताई करने आए और जब वो यहां से गए तो उस गांव की सात-आठ लड़कियां गायब हो गई। यह पहली बार नहीं हुआ था, इससे पहले भी ऐसी घटनाएं घटित हो चुकी थी। इस मामले ने तब तूल पकड़ा जब वहां से एक लड़की भागने में कामयाब हो गई और उसने जानकारी देते हुए बताया कि वो लोग उन लड़कियों को काम के बहाने से ले गए थे और वहां ले जाकर उन्हें जबरन शादी के लिए बेचने वाले थे। इसी प्रकार यदि क्रॉस बार्डर ट्रैफिकिंग की बात करें तो उसका नेचर भी बदल गया है। जो लोग बॉर्डर से बच्चे लेकर आते हैं, उनके इलाके बंटे होते हैं। ये लोग छोटे-छोटे समूहों में बंटकर समुदायों के बीच में रिश्तेदार बनकर रहते हैं और बच्चों को काम के बहाने से अपने साथ लेकर चले जाते हैं। यह सब कुछ पहले से ही प्लान होता है। इसलिए एक साथ उनको ट्रैक कर पाना मुश्किल होता है।

तोता : मैंना यह तो बहुत दुख की बात है ऐसे तो कई मुद्दे बढ़ते कदम के सदस्यों के सामने भी आए है पता है जब वह सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना कर रहे थे उस दौरान सदस्यों को पता चला कि सराय काले खां फ्लाई ओवर के नीचे 20-25 नए बच्चों को मजदूरी के लिए लाया जाता है और जो परिवार पुल के नीचे रहते है वहां से बच्चों के गायब होने की खबर भी आए दिन मिलती रहती है और यह बच्चें ज्यादातर उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम से लाए जाते है जो अपने परिवारों के साथ में भी है और अकेले भी है। सलाहकार श्री विजय कुमार जी ने बताया कि हमारा संगठन सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए काम कर रहा है। हम राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की परेशानियों को रखते हैं। हाल ही में मैं जब अमेरिकन बार एसोसिएशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की गई मीटिंग में भाग लेने लंदन गया तो मैंने देखा कि यह केवल हमारे देश की ही समस्या नहीं है, बल्कि पूरे विश्व की समस्या है। मैंने देखा कि वहां पर भी 14 से 16 वर्ष के बच्चों का ऐसा समूह है जो बाल श्रम, बंधुआ मजदूरी के शिकार हैं। हम कितने सालों से बाल श्रम, बंधुआ मजदूरी, बाल विवाह, तस्करी जैसे मुद्दों पर काम कर रहे हैं, लेकिन अभी तक हम इसको जड़ से खतम नहीं कर पाए हैं। क्योंकि हमारे पास क्लीयर विजन नहीं है। इसके लिए हमें प्रशासन के साथ साथ समुदायों, व लोगों के बीच जाकर मीटिंग करनी चाहिए। बच्चों को इससे बाहर निकालने के लिए उनका सशक्तिकरण करना जरूरी है और इसके लिए हमारे संगठन के पास 9 सालों का तजुर्बा है और इससे कैसे निपटा जाए, इसके लिए योजना भी हैं।

मैंना :सलाहकार शन्नौ ने उदाहरण देते हुए कहा कि एक ही सिक्के के दो पहलू होते पहला वो जो बच्चा जरूरतमंद है और दूसरा वो बच्चा जो बंधुआ मजदूरी में फंसता जा रहा है तो हमे जरूरत है उस बच्चे के साथ काम करने को जरूरतमंद है क्योंकि पहला बच्चा वो ही होता है जो मजदूरी के चंगुल में बंध जाता है अगर इन बच्चों के लिए सरकार पूर्ण रूप से इनके अधिकारों को लेकर काम करे तो बच्चों को बचाया जा सकता है।

तोता : अरे मैंना सही में हमारे अधिकरियों को पहले उन बच्चों के लिए कार्य करना चाहिए जो जरूरतमंद है उनके बारे में जमीनी स्तर से काम करना होगा बच्चे क्या सोचते है उनकी क्या क्या जरूरते है इनके बारे में जानना होगा। और फिर कोई रणनीति बनानी होगी।

मैंना : हां तोता तभी तो श्री उपाध्याय जी ने कहा कि मीडिया को भी इस कार्य के लिए शामिल करने की जरूरत है। श्रीमती सेबा हुसैन जी ने कहा कि तस्करी केवल रेलवे स्टेशन तक ही सीमित नहीं है, बस स्टैंड भी इसके लिए उपयोग में लाए जाते हैं।

चाइल्डलाइन के श्री नाहिद जी ने कहा कि समय समय पर पुलिस, श्रम विभाग, चाइल्डलाइन, विशेष किशोर पुलिस इकाई और बाल कल्याण समितियों के साथ मीटिंगों और कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए।

श्री सलीम जी ने कहा कि सबसे अधिक गरीब परिवार और अनाथ बच्चे ही तस्करी के शिकार हो रहे हैं। इसके लिए हमें राष्ट्रीय पारिवारिक योजना बनानी चाहिए।

श्री जितेंद्र यादव जी ने कहा कि सभी हेल्पलाइन नंबर जैसे 1098 इत्यादि को रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंड, चौराहों इत्यादि पर डिस्प्ले करना चाहिए, जिससे जरूरत पड़ने पर लोग मदद ले सकें। जिले स्तर पर स्वास्थ्य और शिक्षा की योजनाओं से लोगों को जोड़ना चाहिए।

तोता : इस मीटिंग में बहुत से मुद्दो पर चर्चा की गई है अगर मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी के लिए सबने एक साथ मिलकर कार्य किया तो इस मुद्दे को सुलझाया जा सकता है इतना कहकर तोता और मैंना उड़ चले।

सभी पुलिस कर्मियों के लिए मिसाल बने श्री धर्मवीर

बातूनी रिपोर्टर विपिन, रिपोर्टर शम्भू

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के कांस्टेबल श्री धर्मवीर जी अन्य पुलिस अधिकरियों के लिए एक मिसाल बन गए हैं। वह सड़क एवं कामकाजी बच्चों के प्रति संवेदनशील हैं और बच्चों की मदद करने हेतु हमेशा तत्पर रहते हैं। श्री धर्मवीर जी बच्चों से बहुत स्नेह करते हैं, उनकी मदद करते हैं और उन बच्चों को स्टेशन पर काम करते हुए उन्हें शिक्षा से जोड़ने में बढ़ते कदम संगठन की मदद कर रहे हैं। बच्चे जब सुबह सुबह निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर अपना काम करने के लिए आते हैं तो उस वक्त श्री धर्मवीर जी बच्चों को नसीहत देते हैं कि वह पहले जी.आर.पी. थाने में चलाए जा रहे ओपन बेसिक ऐजूकेशन सेंटर

में पढ़ने जाएं, उसके बाद अपना काम करें। वह समय समय पर बच्चों की मदद भी करते हैं। यह नसीहत देने की वजह से वर्तमान में बच्चे पहले सेंटर में पढ़ने जाते हैं, उसके बाद वह अपना काम करते हैं। इसके साथ साथ 10 से अधिक बच्चों को श्री धर्मवीर जी स्वयं पढ़ाते हैं।

उनका कहना है मुझे इस तरह बच्चों की मदद करना बहुत अच्छा लगता है। बच्चे तो ईश्वर का रूप होते हैं। मैं तो इन बच्चों को इसलिए पढ़ाता हूं क्योंकि मेरे जैसे कई ऑफिसर हैं जो बच्चों के साथ शोषण करते हैं, मगर मैं इन बच्चों को पढ़ाता हूं ताकि उनके दिल में भी बच्चों के लिए इसी तरह स्नेह हो। बढ़ते कदम के रिपोर्टर शम्भू ने इस बारे में बच्चों से पूछा तो बच्चों ने बताया की श्री धर्मवीर सर जी हमसे बहुत प्यार करते हैं। उनका कहना है कि वह दूसरे पुलिस अंकल की तरह बच्चों से घृणा नहीं करते। वरना ज्यादातर पुलिस अंकल हम बच्चों से पहले मारपीट या गाली गलौज से ही बात करते हैं। बिना वजह हमें डांटते हैं। श्री धर्मवीर सर जी का व्यवहार बच्चों प्रति बहुत अच्छा है। वह बच्चों से बहुत स्नेह के साथ बातचीत करते हैं और कभी कभी तो सर जी हमारे साथ खाना भी खाते हैं। अगर सभी पुलिस अंकल का व्यवहार बच्चों के प्रति संवेदनशील हो जाए तो हम पुलिस अंकल से बिना झिझके अपनी समस्याओं को बता सकते हैं। अपनी मदद ले सकते हैं।

श्री धर्मवीर जी ने कहा कि इस अखबार के माध्यम से मैं अपने प्यारे पाठकों से कहना चाहूंगा कि हमें बच्चों की इसी तरह मदद करने के लिए तत्पर रहना चाहिए और शिक्षा से जोड़ने के लिए उन्हें प्रेरित करना चाहिए।

बच्चों ने देखा साइंस म्यूजियम

बातूनी रिपोर्टर संदीप, रिपोर्टर शम्भू

डाइटल कंपनी बहुत बड़ी कंपनी है, जो गुड़गांव में है। इस कंपनी में काम करने वाले कुछ अधिकारी सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिलने आए। इस कंपनी के द्वारा लोगों को सलाह दी जाती है कि वह अपने बिजनेस को कैसे आगे बढ़ाएं और नए बिजनेस की किस तरह शुरूआत करें, कैसे बिजनेस के लिए काम करना है, जिससे बिजनेस में मुनाफा हो सके। अकसर जो लोग ऐसी बड़ी बड़ी कंपनियों में काम करते हैं उन्हें पता ही नहीं होता कि हमारे समाज में क्या हो रहा है, कितने ही लोगों को हर रोज भूखे पेट सोना पड़ता और न जाने ऐसे में सड़क एवं कमाकाजी बच्चों की क्या स्थिति है वह अपना जीवन कैसे जीते हैं। इसलिए डाइटल कंपनी के कार्यकताओं ने ठाना है कि वह एक साल में कम कम से एक दिन किसी एन.जी.ओ. होम या बच्चों के साथ अपना वक्त बिताएंगे।

इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु डाइटल कंपनी के 14 कार्यकताओं की तरफ से बढ़ते कदम के 30 सदस्यों को दिनांक 21.11.15 को साइंस म्यूजियम घुमाने के लिए ले जाया गया। इन 14 कार्यकताओं में से कुछ इंजीनियर थे और कुछ आकाउंटेंट थे। सभी बच्चे साइंस म्यूजियम में घूमने गए। वहां अलग अलग प्रकार का साइंस देखा, जिसे देखकर बच्चों को बहुत खुशी हुई तथा उन्हें बहुत तरह की जानकारी मिली। इस जानकारी को पाकर उनके अंदर पढ़ाई करने का जज्बा जागा। उन बच्चों ने डाइटल कंपनी के कार्यकताओं से कहा कि हम भी आपकी तरह पढ़ाई लिखाई करके आगे बढ़ना चाहते हैं तो श्री जतिन जी जो डाइटल कंपनी में इंजीनियर हैं उन्होंने बच्चों को सलाह दी कि आप सब अच्छी तरह अगर मन लगाकर पढ़ाई करोगे तो जरूर आगे बढ़ोगे और एक दिन बिजनेस मैन बनोगे।

बालकनामा सुर्खियों में

front line megazine link . http:www.frontline.in/the-nation/notes-from-the-street/article8123570.ece?homepage=true

DNA news clipping https://youtu.be/7IKLL8kEwfQ

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं